

भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः ।

क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन्दृष्टे परावरे ॥ ८ ॥

तस्मिन् परावरे दृष्टे=कार्य-कारणस्वरूप उस परात्पर पुरुषोत्तमको तत्त्वसे जान लेनेपर; अस्य हृदयग्रन्थः=इस (जीवात्मा) के हृदयकी गाँठ; भिद्यते=खुल जाती है; सर्वसंशयाः=सम्पूर्ण संशय; छिद्यन्ते=कट जाते हैं; च=और; कर्माणि=समस्त शुभाशुभ कर्म; क्षीयन्ते=नष्ट हो जाते हैं ॥ ८ ॥

व्याख्या—कार्य और कारणस्वरूप उन परात्पर परब्रह्म पुरुषोत्तमको तत्त्वसे जान लेनेपर इस जीवके हृदयकी अविद्यारूप वह गाँठ खुल जाती है, जिसके कारण इसने इस जड शरीरको ही अपना स्वरूप मान रखा है; इतना ही नहीं; इसके समस्त संशय सर्वथा कट जाते हैं और समस्त शुभाशुभ कर्म नष्ट हो जाते हैं। अर्थात् यह जीव सब बन्धनोंसे सर्वथा मुक्त होकर परमानन्दस्वरूप परमेश्वरको प्राप्त हो जाता है ॥ ८ ॥

सम्बन्ध—उन परब्रह्मके स्थान, स्वरूप और उनकी महिमाका वर्णन करते हैं—

हिरण्मये परे कोशे विरजं ब्रह्म निष्कलम् ।

तच्छुभ्रं ज्योतिषां ज्योतिस्तद्यदात्मविदो विदुः ॥ ९ ॥

विन्तर उन परमेश्वरकी उपासना करता है, उसका आत्मा परब्रह्म परमात्माके स्वरूपमें प्रविष्ट हो जाता है॥४॥

सम्बन्ध— उपर्युक्त प्रकारसे परमात्माको प्राप्त हुए महापुरुषोंके महत्वका वर्णन करते हैं—

सम्प्राप्यैनमृषयो	ज्ञानतृसाः
कृतात्मानो	वीतरागाः प्रशान्ताः ।
ते सर्वगं सर्वतः प्राप्य धीरा	
युक्तात्मानः सर्वमेवाविशन्ति ॥५॥	

वीतरागाः=सर्वथा आसक्तिरहित; **कृतात्मानः**=(और) विशुद्ध अन्तःकरणवाले; **ऋषयः**=ऋषिलोग; एनम्=इस परमात्माको; **सम्प्राप्य**=पूर्णतया प्राप्त होकर; **ज्ञानतृसाः**=ज्ञानसे तृप्त (एवं); **प्रशान्ताः**=परम शान्त (हो जाते हैं); **युक्तात्मानः**=अपने-आपको परमात्मामें संयुक्त कर देनेवाले; **ते**=वे; **धीराः**=ज्ञानीजन; **सर्वगम्**=सर्वव्यापी परमात्माको; **सर्वतः**=सब ओरसे; **प्राप्य**=प्राप्त करके; **सर्वम् एव**=सर्वरूप परमात्मामें ही; **आविशन्ति**=प्रविष्ट हो जाते हैं॥५॥

व्याख्या— वे विशुद्ध अन्तःकरणवाले सर्वथा आसक्तिरहित महर्षिगण उपर्युक्त प्रकारसे इन परब्रह्म परमात्माको भलीभाँति प्राप्त होकर ज्ञानसे तृप्त हो जाते हैं। उन्हें किसी प्रकारके अभावका बोध नहीं होता, वे पूर्णकाम—परम शान्त हो जाते हैं। वे अपने-आपको परमात्मामें लगा देनेवाले ज्ञानीजन सर्वव्यापी परमात्माको सब ओरसे प्राप्त करके सर्वरूप परमात्मामें ही पूर्णतया प्रविष्ट हो जाते हैं॥५॥

सम्बन्ध— इस प्रकार परमात्माको प्राप्त हुए महापुरुषोंकी महिमाका वर्णन करके अब ब्रह्मलोकमें जानेवाले महापुरुषोंकी मुक्तिका वर्णन करते हैं—

वेदान्तविज्ञानसुनिश्चितार्थः

संन्यासयोगाद् यतयः शुद्धसत्त्वाः ।
ते ब्रह्मलोकेषु परान्तकाले
परामृताः परिमुच्यन्ति सर्वे ॥६॥

[ये] वेदान्तविज्ञानसुनिश्चितार्थः—जिन्होंने वेदान्त (उपनिषद्) शास्त्रके विज्ञानद्वारा उसके अर्थभूत परमात्माको पूर्ण निश्चयपूर्वक जान लिया है (तथा); संन्यासयोगात्=कर्मफल और आसक्तिके त्यागरूप योगसे; शुद्धसत्त्वाः—जिनका अन्तःकरण शुद्ध हो गया है; ते=वे; सर्वे=समस्त; यतयः=प्रयत्नशील साधकण; परान्तकाले=मरणकालमें (शरीर त्यागकर); ब्रह्मलोकेषु=ब्रह्मलोकमें (जाते हैं और वहाँ); परामृताः=परम अमृतस्वरूप होकर; परिमुच्यन्ति=सर्वथा मुक्त हो जाते हैं ॥ ६ ॥

व्याख्या—जिन्होंने वेदान्तशास्त्रके सम्यक् ज्ञानद्वारा उसके अर्थस्वरूप परमात्माको भलीभाँति निश्चयपूर्वक जान लिया है तथा कर्मफल और कर्मासक्तिके त्यागरूप योगसे जिनका अन्तःकरण सर्वथा शुद्ध हो गया है, ऐसे सभी प्रयत्नशील साधक मरणकालमें शरीरका त्याग करके परब्रह्म परमात्माके परम धारमें जाते हैं और वहाँ परम अमृतस्वरूप होकर संसारबन्धनसे सदाके लिये सर्वथा मुक्त हो जाते हैं ॥ ६ ॥

सम्बन्ध—जिनको परब्रह्म परमात्माकी प्राप्ति इसी शरीरमें हो जाती है, उनकी अन्तकालमें कैसी स्थिति होती है—इस जिज्ञासापर कहते हैं—

गताः कलाः पञ्चदश प्रतिष्ठा
देवाश्च सर्वे प्रतिदेवतासु।
कर्माणि विज्ञानमयश्च आत्मा
परेऽव्यये सर्व एकीभवन्ति ॥ ७ ॥

पञ्चदश=पंद्रह; कलाः=कलाएँ; च=और; सर्वे=सम्पूर्ण; देवाः=देवता अर्थात् इन्द्रियाँ; प्रतिदेवतासु=अपने—अपने अभिमानी देवताओंमें; गताः=जाकर; प्रतिष्ठाः=स्थित हो जाते हैं; कर्माणि=(फिर) समस्त कर्म; च=और; विज्ञानमयः=विज्ञानमय; आत्मा=जीवात्मा; सर्वे=ये सब-के-सब; परे अव्यये=परम अविनाशी परब्रह्ममें; एकीभवन्ति=एक हो जाते हैं ॥ ७ ॥

व्याख्या—उस महापुरुषका जब देहपात होता है, उस समय पंद्रह कलाएँ*

* पंद्रह कलाएँ ये हैं—श्रद्धा, आकाशादि पञ्च महाभूत, इन्द्रिय, मन, अन्त्र, वीर्य, तप, मन्त्र, कर्म, लोक तथा नाम। (देखिये प्रश्नोपनिषद् ६। ४)

और मनसहित सब इन्द्रियोंके देवता—ये सब अपने-अपने अभिमानी समष्टि देवताओंमें जाकर स्थित हो जाते हैं। उनके साथ उस जीवन्मुक्तका कोई सम्बन्ध नहीं रहता। उसके बाद उसके समस्त कर्म और विज्ञानमय जीवात्मा—सब-के-सब परम अविनाशी परब्रह्ममें लीन हो जाते हैं॥७॥

हरिकृष्णदास गोयन्दका, ईशादि नौ उपनिषद्, गीताप्रेस, गोरखपुर, संवत् २०७४, पृ. १७६-२७९।